

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

ब्रह्मदेर कृतं  
॥ श्री सौलभ्यचूडामणिसुत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री सौलभ्यचूडामणिस्रोत्रम् ॥

ब्रह्मोराच

चक्राश्लोजे समासीनं चक्राद्यायुधधारिणम्।  
चक्ररूपं महारिषुं चक्रमञ्ज्रेण चिन्तये ॥ 1 ॥

सर्दारयरसंपूर्णं भयस्यापि भयङ्करम्।  
उग्रं त्रिनेत्रं केशाग्निं ज्वालामालासमाकुलम् ॥ 2 ॥

अप्रमेयमनिर्देश्यं ब्रह्माणुर्यापुत्रिग्रहम्।  
अष्टायुधपरीरारम् अष्टापदसमद्युतिम् ॥ 3 ॥

अष्टारचक्रमतुग्रं संवर्ताग्निसमप्रभम्।  
दक्षिणैर्बाह्वभिश्चक्रमुसलाक्कुशपत्रिणः ॥ 4 ॥

दधानं रामतश्शङ्खाचापपाशगदाधरम्।  
रक्ताम्बरधरं देवं रक्तमाल्योपशोभितम् ॥ 5 ॥

रक्तचन्दनलिप्ताङ्गं रक्तवर्णमिराशुदम्।  
श्रीरत्सकौस्तुभोरङ्गं दीप्तकुण्डलधारिणम् ॥ 6 ॥

हारकेयूरकटकशृङ्खलाद्वैरलङ्कृतम्।  
दुष्टनिग्रहकर्तारं शिष्टानुग्रहकारिणम् ॥ 7 ॥

एवं सौदर्शनं नित्यं पुरुषं हृदि भारयेत्।  
सौलभ्यचूडामण्याख्यं मया भक्त्या समीरितम् ॥ 8 ॥

চূডায়ুক্তং ত্রিসন্ধ্যাযাং যঃ পঠেৎস্তোত্রমুত্তমম্।  
ভযং চ ন ভরেত্তস্য দুরিতং চ কদাচন ॥ 9 ॥

জলে রাহপি স্থলে রাহপি চোরদুঃখমহাপদি।  
সঙগ্রামে রাজসংমর্দে শক্রভিঃ পরিপীড়িতে ॥ 10 ॥

বন্ধনে নিগলে রাহপি সঙ্কটেহপি মহাভযে।  
যঃ পঠেৎপরযা ভক্ত্যা স্তোত্রমেতজ্জিতেন্দ্রিয়ঃ।  
সর্ষত্র চ সুখী ভূৎরা সর্ষান্ কামানরাপ্নুয়াৎ ॥ 11 ॥

॥ শ্রী সৌলভ্যচূডামণিস্তোত্রং সমাপ্তম্ ॥